सच्ची बात

TRUE FACTS

भाग-3

कृतिकार-

प.पू. उच्चारणाचार्य 108 श्री विनम्रसागर जी महामुनिराज

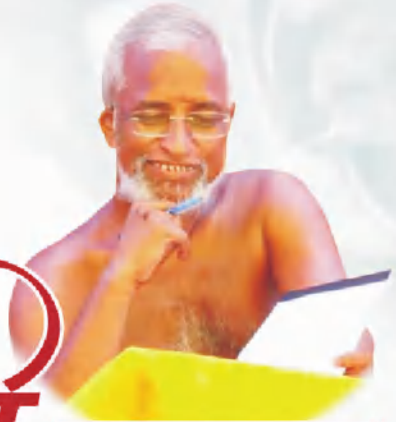

सच्ची बात

TRUE FACTS

भाग-3

कृतिकार-
प.पू. उच्चारणाचार्य 108 श्री विनम्रसागर जी महामुनिराज

सच्ची बात
TRUE FACTS
भाग-3

भक्तामर शिविर विशेषांक

आशीर्वाद
प.पू. गणाचार्य 108 श्री विरागसागर जी महामुनिराज

कृतिकार
प.पू. सिद्धान्तज्ञ उच्चारणाचार्य 108 श्री विनम्रसागर जी महामुनिराज

प्रेरणा
श्रमणी आर्यिका 105 विमलश्री माताजी

संकलन व अंग्रेजी अनुवाद
बा.ब्र. श्रिया शास्त्री (प्राची) दीदी

संस्करण
तृतीय संस्करण-2023, 1100 प्रतियाँ

पावन प्रसंग
13वें आचार्य पदारोहण दिवस के अवसर पर

प्राप्ति स्थान
विरागोदय तीर्थ रक्षा समिति, पथरिया, दमोह (म.प्र.)
धर्म प्रभावना (ट्रस्ट) न्यास, भिण्ड (म.प्र.) मो. 09826801542
समता तीर्थ धाम, सीपुर (राज.) मो. 09828613614
देवेन्द्र जैन, बीना (म.प्र.) मो. 07580223344
निर्ग्रन्थ श्रमण सेवा समिति, भिण्ड (म.प्र.) 09425127061
डॉ. हेमलता जैन धर्मपत्नि श्री संजय जैन, भारत स्टोन, खांदू कॉलोनी, बांसवाड़ा

प्रकाशन
वीतराग श्रमण श्रुत संवर्धन ट्रस्ट, भिण्ड
मो. 9826801542

मुद्रक : ज्योति ग्राफिक्स, जयपुर
मो. 8290526049, 8619727900 jyotigraphics84@gmail.com

विनम्र देशना चैनल
YouTube
Subscribe
Shankar Bhaiya
Vinamra Deshna Parivar
M.: 7999877637, 9414426947
जिनवाणी

जीवन है पानी की बूँद के 7500 छंद के रचयिता
परम पूज्य उच्चारणाचार्य श्री विनम्रसागर जी महामुनिराज

शुभाशीष वचन

मोक्षमार्ग को प्रदर्शित करने वाले भव्याम्बुजों को अपनी दिव्यवाणी से विकसित करने वाले मात्र तीर्थंकर देव हैं। अर्थात् प्राणीमात्र के कल्याण की भावना द्वारा जिन्होने सर्वोत्कृष्ट परमात्म पद को प्राप्त किया है। वे ही मुख्य रूप से प्रवचन के अधिकारी हुआ करते हैं। पश्चात् गणधरदेव प्रवचन के उत्तराधिकारी हुआ करते हैं। सम्प्रति वर्तमान में पुण्याभाव व काल के प्रभाव से साक्षात् तीर्थंकर देव की दिव्यध्वनि पियूषवाणी श्रवण करने का सौभाग्य नहीं और गणधरदेव का भी सान्निध्य न होने से उनकी वाणी का रसपान भी नहीं कर पा रहे हैं। इन दोनों के अभाव में जिनवाणी को प्रसारित करने का उत्तराधिकारी आचार्य परमेष्ठी को बनाया गया। जिन्होंने परम्परा से प्रसारित जिनेन्द्र प्रभु की वाणी को स्वशक्ति व क्षयोपशम के द्वारा प्रवाहित किया उन्हीं पूर्वाचार्यों की परम्परा को प्रवाह प्रदान करने का कार्य गुरु आज्ञा व आशीष से हमें करना पड़ता है।

कहते हैं महान बनने के लिए किसी को हटाने की, मिटाने की, वश करने की आवश्यकता नहीं, बल्कि अपने को बढाने की आवश्यकता है। इसके लिए सम्यक्त्व धारणा करना सर्वप्रथम परम आवश्यक है। सम्यक्त्वपूर्वक ज्ञान ही कार्यकारी होता है। धर्म का एक अंश एक **सच्ची बात** भी जीवन का काया-कल्प करने में समर्थ है। जिस प्रकार सूर्य की एक किरण विश्व में व्याप्त अंधकार को नष्ट करने में समर्थ है, अग्नि की एक चिंगारी घास के ढेर को भस्म करने में समर्थ है, और अमृत की एक बूँद समस्त व्याधियों का उपशमन करने में समर्थ है और कल्पवृक्ष

छोटा हो या बड़ा, मन की मुराद तो पूरी करेगा ही। उसी प्रकार प्रवचन पाँच पृष्ठों पर लिखा हो या सार एक पृष्ठ पर लेकिन यदि उसमें सत्यता का तेज है तो वह जीवन में धन्यता लाएगा ही।

श्रुतज्ञान की परम्परा को भविष्य के लिए वृद्धिंगत करने में मनीषियों, महापुरुषों, आचार्यों तथा अन्यों के बेजोड़ योगदान से हर प्रकार के ज्ञान के द्वारा सत्साहित्य का प्रतिपादन होता रहा है। गुरु कृपा से माँ जिनवाणी को जन-सामान्य के बीच प्रसारित करने का कार्यभार मुझे सौंपा गया। सभाओं को सम्बोधित करते समय वीर प्रभु के मुख कमल से नि:सृत शब्द वर्गणाओं, गौतमादि गणधर देवों के द्वारा प्रदत्त वाणी व पूर्वाचार्यों के द्वारा लिपि बद्धित शास्त्रों के वाचन के समय चिंतन की गहराइयों में जाकर सम्बोधन के समय जो वाक्य कहे उन वाक्यों को बा.ब्र. श्रिया (प्राची) दीदी ने संकलन किया। हम तो प्रवचन करके आ जाते हैं और ये लोग लिख लेते हैं। दीदी ने उन प्रिय वचनों में से सारभूत बातें, **सच्ची बातें** जो जीवन को सत्यार्थ रूप देने वाले वचनों के बाग से निकले कुछ पुष्प संजोकर उन्हें अंग्रेजी भाषा में अनुवादित कर उन पुष्पों का गुलदस्ता बनाकर आप सभी के समक्ष "**सच्ची बात- True Facts**" के रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास किया। जिससे उन सत्यार्थ बोधक पुष्पों की सुवास आप तक पहुँचे और आपका जीवन सुवासित हो सके। आचार्य भगवन् कहते हैं **सम्यक्त्वाद् दुर्गतेनाश:** सम्यग्दर्शन से दुर्गति का नाश होता है, निर्दोश ज्ञान से कीर्ति प्राप्त होती है, चारित्र से लोक में पूज्यता मिलती है और मोक्ष इन तीनों की सफलता से प्राप्त होता है। अत: दीदी के लिए हमारा खूब-खूब आशीर्वाद है। वह अपनी साधना, ज्ञान, अध्ययन को आगे बढ़ायें। कल्याणकारी जैनेश्वरी दीक्षा धारण कर अपनी इस स्त्री पर्याय का छेदन कर अपने मूल लक्ष्य को प्राप्त करें। दीदी का यह प्रयास जन-जन के लिए लाभकारी हो और सदैव वीतराग शासन जयवंत हो।

शुभाशीष
आचार्य विनम्रसागर

एक नजर कृतिकार पर

जो अट्ठाइस मूलगुणों का पालन करते हुए आत्म साधना में लीन रहते हैं। पाँच महाव्रत, पाँच समिति, पंचेन्द्रिय विजय, छह आवश्यक अस्नान, अदन्त धावन, कैश लौंच करना, पृथ्वी पर सोना, कर पात्र में आहार, खड़े होकर आहार लेना, दिन में एक ही बार आहार जलादि ग्रहण करना। इस प्रकार ये सात शेष मूलगुण होते हैं। जिनका यतीश्वर पालन करते हैं। सभी जीवों में मैत्री भाव रखते हैं। इस प्रकार साधुओं का जीवन उनकी चर्या विलक्षण व महान होती है। संसार में इससे बढ़कर त्याग व आचरण अन्यत्र कहीं नहीं पाया जा सकता, ये तो मात्र साधु परमेष्ठी के मूलगुण हैं। अब आचार्य परमेष्ठी के छत्तीस मूलगुण हुआ करते है, जिन्हें वे पालन करते हैं। उन्हीं संत भगवंतों की शृंखला में हमारे पूज्य गुरुदेव उच्चारणाचार्य 108 श्री विनम्रसागर जी महामुनिराज हैं। उच्चारणाचार्य का अर्थ होता है जिनका आचरण सभी मुनियों में उच्च हो उन्हें उच्चारणाचार्य कहते हैं अथवा जिनका शब्द उच्चारण सर्वश्रेष्ठ होता है उन्हें उच्चारणाचार्य कहते हैं।

पूज्य गुरुवर में ये दोनों ही विशेषताएँ हैं। उनका आचरण भी उच्च है और शब्दोच्चारण भी श्रेष्ठ है। इसलिए मनीषियों श्रेष्ठियों ने उन्हें उच्चारणाचार्य की उपाधि से विभूषित किया। उच्च शिक्षा प्राप्त कर जहाँ आज का युवा भोगों की और दौड़ता हैं वही हमारे पूज्य गुरुदेव एम.कॉम. डिस्ट्रिक टॉप करने के बाद योग की ओर दौड़ पड़े। हर व्यक्ति कोई न कोई खोज में रहता है मगर हमारे गुरुदेव आत्मानंद (परमानंद) की खोज में जुटे रहते हैं। अध्यात्म के गूढ़ रहस्यों का उद्घाटन करते हुए निरंतर प्राकृत, संस्कृत, हिन्दी के काव्यों की रचना किया करते हैं इसीलिए अध्यात्म ग्रंथों पर 7500 छंदों की रचना स्वत: हो जाती है। पूज्य गुरुदेव में अनंतों गुण हैं जिनका व्याख्यान करते-करते अंत नहीं पा सकते वे वात्सल्य के धनी पूज्य गुरुदेव इस धरा को पवित्र कर रहे हैं उनके श्रीचरणों में कोटिश: नमोऽस्तु...

-गुरु चरण चंचरीक
श्रमण मुनि विज्ञसागर

।। श्री गुरवे नमः ।।

शुद्धात्मान्वेषियों ने चिरकाल से स्वात्माश्रय की निर्मल साधना के द्वारा व श्रुत उपासना द्वारा निज ज्ञान से श्रमण संस्कृति को सुसज्जित किया है। स्वज्ञान व क्षयोपशम से प्राप्त जिनवर देव के सर्वांग से नि:सृत दिव्यध्वनि का रसपान कर परम्परा से गणधरादि पूर्वाचार्यों द्वारा प्रसारित ज्ञान गंगा को प्रवाहित कर भव्य जीवों को स्नपित कराय गया एवं मुक्ति पथ पर आरूढ़ कराया गया है।

उस ही जिनश्रुत परम्परा के आराधक, त्रिषष्टि गुणधारक, परम कल्याणकारी, विमल प्रतिमूर्ति, गुरु आज्ञानुवर्ती, यथा नाम तथागुण वैशिष्ट्य से सुशोभित, सिद्धान्तज्ञ, उच्चारण के धनी गुरुवर की वाणी जन-जन कल्याणी है। जो अध्यात्म के गूढ रहस्यों को उद्घाटित करती हुई आबालवृद्ध को संसार की असारता का दिग्दर्श कराती हुई युवा पीढ़ी की ज्वलंत शंकाओं का समाधान करती हुई काव्य रचनाओं द्वारा पूर्वाचार्यों की वाणी को जन सामान्य से साक्षात्कार कराने वाली है। जिनकी कलम ने "जीवन है पानी की बूँद" भजन के 7500 से अधिक छंदों की रचना कर एक कीर्तिमान स्थापित किया है, वहीं शताधिक भजन, गजल आदि की रचना कर साहित्य जगत में अमिट छाप बनायी है।

भव्य जीवों के सम्बोधन काल में प्रवाहित गुरुवाणी के कुछ अनमोल वाक्यों का संकलन कर संघस्थ बा.ब्र. श्रिया शास्त्री (प्राची) दीदी ने उन्ही वचनों को आंग्ल भाषा में रूपान्तरित कर उन वचनरूपी सुमनों का गुलदस्ता "सच्ची बात" भाग-3 के रूप में तैयार कर आप सभी सुधी आध्यात्मरसिक श्रमणोपसकों के समक्ष प्रस्तुत कर सर्वजगत को उन वचनों की सुरभि से सुवासित करने का उत्कृष्ट प्रयास किया है।

उनकी यह जिनश्रुत व गुरु भक्ति अक्षुण्ण बनी रहे श्रुतदेवी उन पर प्रसन्न बनी रहें यही मंगल कामना करते हैं।

अंत में गुरुवर के अनमोल वचनों से सुसज्जित यह पुस्तक "सच्ची बात" भाग-2 आप सभी में नव चेतना का सृजन करेगी। इन्हीं मंगल भावनाओं के साथ गुरुवर के 13वें आचार्य पदारोहण दिवस पर युगल पाद पद्मों में त्रय भक्ति पूर्वक कोटिश: नमोऽस्तु...

गुरु पाद पद्मानुरागी
श्रमणी आर्यिका विमलश्री माताजी

जीवन है पानी की बूँद के 7500 छंद के रचयिता
परम पूज्य उच्चारणाचार्य श्री विनम्रसागर जी महामुनिराज

पुण्यार्जक परिवार

श्री धर्मेन्द्र जी-श्रीमती संध्या जैन
सजल-दीपाली जैन, पर्व जैन एवं समस्त कुबेर परिवार
सिमकम्स डिस्ट्रीब्यूटर प्रा. लि., इन्दौर (म.प्र.)

“हे आत्मन्! यदि आप गुरु रूपी तपेली में बैठकर तप करोगे तो वाष्प की तरह अनंत की यात्रा पूर्ण कर पाओगे और कहीं अहंकार के फ्रिज में प्रवेश कर गये तो मान की बर्फ का रूप लेकर पानी से अपना अस्तित्व अलग दर्शाओगे। पर ध्यान रहे बर्फ पानी का विभाव रूप है, वह मात्र देखने में ठण्डी होती है, परन्तु उसकी ताशीर गर्म ही हुआ करती है, वैसे ही मान अच्छा लगता है परन्तु उसका परिणाम सदैव बुरा ही होता है। जिन्दगी को जल के समान सरल बनाकर वाष्प बनने का पुरुषार्थ करें।”

“O soul! If you practice penance sitting in the tapeli of the preceptor, you will be able to complete your journey of infinity like vapours; however, if you enter the fridge of arrogance, then you will show your existence different from water taking the form of ice of ego. But keep in mind that ice is a derivative of water, it looks cool in feeling but its effect is hot. In the same manner, respect due to arrogance seems to be good but its repercussions are always bad. Therefore, make effort to become vapour by making life as simple as water.”

“हे भव्यात्माओं! मैं श्रेष्ठ हूँ ऐसा सोचना या कहना आत्मविश्वास है लेकिन मैं ही श्रेष्ठ हूँ, ऐसा कहना या सोचना अहंकार है। आत्मविश्वास हमें परमात्मा की ओर ले जाता है और अहंकार सदैव पतन की ओर।”

“O Great souls! To think or to say that I am the best reflects self-confidence; to think or to say that only I am the best reflects arrogance. Self-confidence leads us to glory while arrogance always leads us to downfall.”

"हे भव्यात्माओं! जैसे आप अपनी बहिन को ससुराल में खुश देखना पसंद करते हैं ठीक वैसे ही अपनी पत्नी को खुश रखना पसंद करें क्योंकि वो भी किसी की बहिन है।"

"O magnificent souls! As you like to see your sister happy with her in-laws, likewise you should keep your wife happy because she is also a sister of someone else."

"हे भव्यात्माओं! परेशान वह ही हैं जो सदैव दूसरों का मूल्यांकन करने में लगे रहते हैं क्योंकि खुश तो वे होते हैं जो स्वयं का मूल्यांकन करते हैं।"

"O Great souls! Troubled are those who are always busy in evaluating others; however, happy are those who evaluated themselves."

"हे भव्यात्माओं! दुनियाँ में भटकाने वाले विकल्प करोड़ो हैं, लेकिन मंजिल पर ले जाने वाला संकल्प मात्र एक ही होता है। एक संकल्प सभी विकल्पों पर भारी है। अत: अपने मन को संकल्पशाली बनायें।"

"O Great souls! There are millions of misleading options in the world, however, there is only one determination that leads you to the destination. Only one resolve outweighs all the options. Therefore, make up your mind resolute."

"हे भव्यात्माओं! ये सर्व इन्द्रियाँ गधा हैं, मन घोड़ा है और दिल शेर है, जिसने सबको मरोड़ा है। हम इन्द्रियों की मानकर उनके अनुसार चलें तो गधा, मन के अनुसार चलें तो घोड़ा और दिल कहे वही करें तो शेर हैं और संयमी ही शेरदिल होता है। तभी तो कहा है दिल शरीर के लेफ्ट (Left) में होता है पर निर्णय सारे राइट (Right) लेता है।"

"O Great souls! All these senses are like a donkey; mind is like a horse; and the heart is like a lion which has twisted everyone. If we act according to the dictates of the senses, we become a donkey; if we act according to the dictates of mind, we become a horse; if we act according to what our heart dictates, we are like a lion. Only a restrained one has a heart of a lion. That is why it is said that the heart is in the left side of the body, but its decisions are always right."

"हे भव्यात्माओं! ये दुनियाँ, ये धन, ये दौलत किस्मत के नजारे हैं, आने जाने का दौर है आज जहाँ तुम हो वहाँ कल कोई और होगा इसीलिए अहं और वहम ये दोनों ही कभी अन्दर न आने दें।"

"O Great souls! This world, this wealth, all these are the outcomes of luck; it is a time of coming and leaving; Where you are today, someone will replace you tomorrow; Therefore, do not let pride and delusiontouch you."

"हे भव्यात्मान्! वाणी को वीणा बनाएँ बाण नहीं, क्योंकि वीणा बनाया तो जीवन संगीतमय मधुर होगा और बाण बनाया तो सिर्फ महाभारत के युद्ध के नगाड़े ही सुनायी देंगे। हमेशा प्रेम की प्रिय भाषा बोलिए क्योंकि इसे बहरे भी सुन लेते हैं और गूँगे भी समझ लेते हैं।"

"O Great souls! Make speech a veena, and not an arrow because if you make it a veena, life will be musically sweet, and if you make it an arrow, only the beating of the drums of the battle of Mahabharat will be heard, Always speak the sweet language of love because even the deaf can hear it and dumb can understand it too."

भक्तामर शिविर फिरोजाबाद

भक्तामर शिविर ग्वालियर

"हे भव्यात्माओं! संगति पर सदैव ध्यान दें। जैसे नीम के पत्तों से पानी कड़ुवा हो जाता है, सुअरों की संगति से गाय का बछड़ा भी मल भक्षण करने लग जाता है, नदी का मीठा जल भी समुद्र के संसर्ग से खारा हो जाता है, अग्नि के संसर्ग से शीतल जल भी उष्ण हो जाता है। ठीक उसी प्रकार दुर्जनों की संगति से सज्जन भी दुर्जन बन जाते हैं।"

"O Great souls! Always pay attention to your companionship.As the water becomes bitter mixing with neem leaves; Cow calf also start eating excreta in the company of pigs; also the sweet water of a river becomes salty coming into contact with the water of sea; cold water becomes hot coming into contact with the heat of fire; Exactly in the same way, in the company of wicked people, gentle people also become wicked."

"हे भव्यात्माओं! शंका से सम्यक्त्व नष्ट हो जाता है, आरंभ–सारंभ करने से अहिंसा नष्ट हो जाती है, स्त्रियों की संगति से ब्रह्मचर्य नष्ट हो जाता है और धन–परिग्रह करने से दीक्षा ही नष्ट हो जाती है। अतः हे आत्मन्! इन सभी को अपने अंदर स्थान कभी भी मत देना।"

"O Great souls! Doubt destroys right-faith; sinful activities and anger destroy non-violence; celibacy is destroyed in the company of women and by accumulating wealth initiation is destroyed. Therefore, O soul! Never give room to these evils within thy self."

"हे आत्मन्! भाग्य के दरवाजे पर सिर पीटने से बेहतर है अच्छे कर्मों का तूफान (खड़ा) पैदा करें, भाग्य के दरवाजे खुद-बखुद ही खुल जायेंगे, कर्म ही भाग्य की तस्वीर बनाते हैं, जो कर्म नहीं करते वो अभागे कहे जाते हैं।"

"O Great soul! It is better to create a storm of good deeds than to bang your head on the door, the doors of luck will be opened on their own. Deeds are the creator of the designs of luck; those who do not do good deeds are called unfortunate."

“हे भव्यात्माओं! जिन्दगी को गमले के पौधे की तरह मत बनाओ जो थोड़ी सी तेज धूप लगने पर मुरझा जाये जिन्दगी को जंगल के पेड़ की तरह बनाओ जो हर परिस्थिति में मस्ती से झूमता रहे।”

“O Great soul! Don't make life like a plant in a pot which withers on getting a bit strong sunlight. Make life like a forest tree which swings happily in every situation.”

"हे भव्यात्माओं! मन की पवित्रता, हृदय की विशालता, विचारों की गहनता, साधर्मियों से मित्रता, कषायों का दमन, वात्सल्य का उपवन और आपस में मिलन यही है क्षमा धर्म का कथन। इसे चरितार्थ करें।"

"Purity of the heart; vastness of the heart; depth of thoughts; friendship with co-religionists; suppression of passions; union with the soul; the garden of love; mutual comradeship; this is the essence of the religion of forgiveness."

"हे आत्मन्! ज्ञान के बाद यदि अहंकार का जन्म होता है तो वह ज्ञान जहर है, किंतु ज्ञान के बाद यदि नम्रता का जन्म होता है तो वह ज्ञान अमृत बन जाता है, क्योंकि ज्ञान का अहंकार तो सभी को हो जाता है; परन्तु अहंकार का ज्ञान किसी को नहीं होता।"

"O Great soul! If the ego is born on gaining knowledge then such knowledge is like poison;if humility is born on gaining knowledge then such knowledge becomes nectar because everyone becomes proud of knowledge but none has the knowledge of arrogance."

"हे भव्यात्माओं! अपने जीवन में सदैव नवीनीकरण हेतु तैयार रहें क्योंकि बीज जब अपना अस्तित्व मिटाता है, तभी वह वृक्ष का रूप धारण कर पाता है और वह कभी भी पृथ्वी से नहीं कहता कि मुझे जल दो, खिला दो, पृथ्वी स्वयं ही उसका समर्पण देखकर उसे वृक्ष बना देती है; अर्थात् मान का कठोर कवर हटाकर जब बीज मृदुता की भूमि में प्रवेश करता है तब पृथ्वी आदि सब उसके सहायक हो जाते हैं और वह बीज वृक्ष रूप फलीभूत हो जाता है।"

"Always be ready for renewal in your life because when the seed ceases to exist, only then it takes the form of a tree. It never asks the earth to give it water, feed it; the earth itself, seeing its dedication, nurtures it into a tree. When the seed removing its hard covering enters into the soft land, then the earth etc. all become its helper and the seed comes to fruition in the form of a tree."

“हे भव्यात्माओं! ध्यान रहे प्रभु चरणों में श्रद्धा और गुरु चरणों में समर्पण बहुत आवश्यक है। जैसे मनी प्लान्ट में पत्ते तो लगते हैं परन्तु फूल व फल नहीं, उसी प्रकार भगवान के प्रति श्रद्धा, गुरु के सामने समर्पण भाव नहीं है तो उसे स्वर्ग रूपी पत्ते तो मिल सकते हैं लेकिन वह मोक्ष रूपी फल को प्राप्त नहीं कर सकता।”

“O soul! Keep in mind that the faith in the feet of the Lord and the devotion in the feet of the preceptor are very important. Leaves grow on a money plant but no fruit or flower. Similarly, if there is faith in God but no devotion towards the preceptor, then you will get heaven in the form of leaves, but you will not be able to enjoy the fruit of salvation.”

भक्तामर शिविर आगरा

अजमेर में
उदयपुर में
भक्तामर शिविर
निवाई में
देवली में
भक्तामर शिविर गोरमी

"हे भव्यात्माओं! अहंकार को मिटाना ही ऊँकार को पाना है,अहंकार की मृत्यु ही सत्य का जीवन है, एक अहं ही है जो स्वयं के अर्हं से नहीं मिलने देता है। अहंकार की आँधी हमें कभी भी उड़ा ले जा सकती है ख्याल रखे अहंकार की आँधी में उड़ने से पहले जीवन की बूँद को सागर में समाहित कर, समर्पण कर देना। क्योंकि बूँद जब मिटती है तभी वह सागर बनती है, बूँद मिटी तो नदी बनी, नदी मिटी तो सागर बनी और अपनी मंजिल को प्राप्त कर लिया। अत: अपने जीवन को जल के समान सरल व तरल बनायें, जिससे धन्यता को प्राप्त कर शुद्ध चैतन्यता को प्राप्त हो जायें।"

"O soul! To remove ego is to attain Onkaar. The death of ego is the life of truth. It is only ego that prevents one to meet one's own soul. The storm of ego can blow us away anytime. Take care, before blowing into the storm surrender your life like a drop merges into the ocean because when the drop vanishes, it becomes the ocean. When a drop vanishes, it becomes a river; when a river merges into an ocean, it becomes an ocean and it attains its destination. Therefore, make your life as simple and fluid as water so that getting blessed you can attain pure consciousness."

"हे भव्यात्माओं! सर्प यदि काट ले तो पूरे शरीर में विष फैल जाता है, ठीक उसी प्रकार मायाचारी रूपी साँप काटने से पूर्ण आत्मा और शरीर में विष फैल जाता है। उसके सभी धर्म कर्म समाप्त हो जाते हैं। इतना ख्याल रखिये साँप भले ही कितना ही टेड़ा चलता हो पर जब भी जायेगा तो सीधा होना ही पड़ेगा। उसी प्रकार आप कितना भी छल-कपट कर लें परन्तु जब भी परमात्मा से मिलने की आकांक्षा होगी तो सरल बनना ही पड़ेगा।"

"If a snake bites, there is spread of poison in whole of the body. Exactly like this by the bite of deceitful snake, the poison is spread throughout the body and the soul. All his religious deeds are destroyed. Always remember that no matter how crooked the snake moves, but whenever it enters into its hole, it will have to move straight. Similarly, no matter how deceitful you act, but whenever you have an aspiration to meet God, you will have to be simple."

"हे भव्यात्माओं! श्रेष्ठ वही है जिसमें दृढ़ता है जिद नहीं, जो बहादुर है जल्दबाज नहीं, दयावान है, ज्ञानी है, अहंकारी नहीं, करुणा है प्रतिशोध नहीं, निर्णायकता है असमानता नहीं, अगर लोग आपकी अच्छाई को आपकी कमजोरी समझने लगें तो समझो गलती उनकी है आपकी नहीं।"

"The best is one who has firmness, not stubborn but brave, not hasty but kind, not weak but knowledgeable, not arrogant but compassionate, not revengeful but decisive, not confused. If people take your goodness as your weakness, then the problem is theirs and not yours."

"हे भव्यात्माओं! धन वाले कभी धन्य नहीं हुआ करते अपितु धर्म वाले सदैव धन्य होते हैं। धन वेश्या के समान चंचल है यह कभी यहाँ तो कभी वहाँ ऐसे ही लक्ष्मी भी एक स्थान पर न ठहरती है, न ठहरने देती है। इसलिए धन धन्य नहीं, धर्म धन्य है।"

"People with money are never blessed, but religious people are always blessed. Money is fickle like a prostitute. It stays sometime here and sometime there. Likewise Laxmialso never stays at one place and never permits to stay at one place. Therefore, money is not blessed, religion is blessed."

"हे भव्यात्माओं! वर्तमान में मानव की सोच बड़ी ही नकारात्मकता की ओर जाती जा रही है, सोच सदैव सकारात्मक होनी चाहिए। बर्तन, खाली हो तो यह मत समझिये कि व्यक्ति कुछ माँगने चला है, क्या पता वह सब कुछ बाँटकर आया हो। सकारात्मक सोच ही सदैव जीवनोत्थान का कारण बनती है।"

"At present, human thinking is tending towards negativity, but the thinking should always be positive. If the vessel is empty, don't take it as if the person is going to ask for something, who knows he has coming after sharing everything! Positive thinking always leads to upliftment."

"हे भव्यात्माओं! त्याग जीवन का सौंदर्य है। पेट में कुछ डालने से पहले मल–मूत्र का त्याग करना पड़ता है, पत्थर यदि पत्थरत्व का त्याग न करे तो वो कभी प्रतिमा नहीं बन सकता, ठीक वैसे ही मन में परमात्मा को विराजमान करने के लिए विषय कषाय रूपी मल का त्याग करना पड़ता है। अत: अर्जन से पहले विसर्जन नितांत आवश्यक है।"

"Sacrifice is the beauty of life. Excrement has to be discarded before filling the stomach. If a stone does not sacrifice its petrification, it can never be an idol. Likewise, to enshrine the divine in the mind, one has to sacrifice excreta of passions. Therefore, before attainment, sacrifice is absolutely essential."

"हे भव्यात्माओं! त्याग जरूरी है, यदि गाय दूध का, स्त्री गर्भ का, बादल-जल का, शरीर-मल का, ज्ञानी-अज्ञान का, सम्यग्दृष्टि-मिथ्यात्व का त्याग करता है तभी स्वच्छ व उत्कृष्ट फल को प्राप्त करता है।"

"Sacrifice is essential. When a cow sacrifices its milk, a woman sacrifices her womb; clouds sacrifice water; the body discards excreta; a knowledgeable discards wrong-knowledge; a right-faith holder gives up wrong-faith; only then they get a clean and excellent result."

"हे भव्यात्माओं! संसार का साथ–साथ नहीं मात्र एक छलावा है।

लक्ष्मी से साथ माँगा तो बोली– मैं मूर्ख नहीं हूँ, जो जिन्दगी भर तुम्हारी रक्षा करूँ, मैं तो बस मरोगे तो लकड़ी लाने के काम आऊँगी और तेरवे में मिठाई बटवाऊँगी।

पत्नी से साथ माँगा तो बोली–देहरी तक आऊँगी और सालभर दु:ख मनाऊँगी।

भाई से साथ माँगा तो बोला– मरघट तक छोड़ आऊँगा।

मित्र से साथ माँगा तो बोला–मतलबी यार किसके काम निकला, खाया–पिया और खिसके।

पुत्र से साथ माँगा तो बोला– अन्तिम अग्नि मैं ही दूँगा।"

अत: संसार में कोई किसी का नहीं है।

"The company of the world is not a real company. It is just an illusion. When I asked Laxmi for company, she said, " I am not a fool to protect youlife long. I'll be of use to manage wood at the time of your death and at the time of your Terahanvi (13th day after death) to manage distribution of sweets. When I asked my wife for the company, she said, " I'll come only upto the threshold and mourn for you only for a year."When I asked the company of my brother, he said, " I'll leave you to mortuary." When I asked the company of my friend, he said," Mean friends belong to whom? Worked out, ate and drank, and slipped away." When I asked the company of my son, he said" I'll give the last fire."

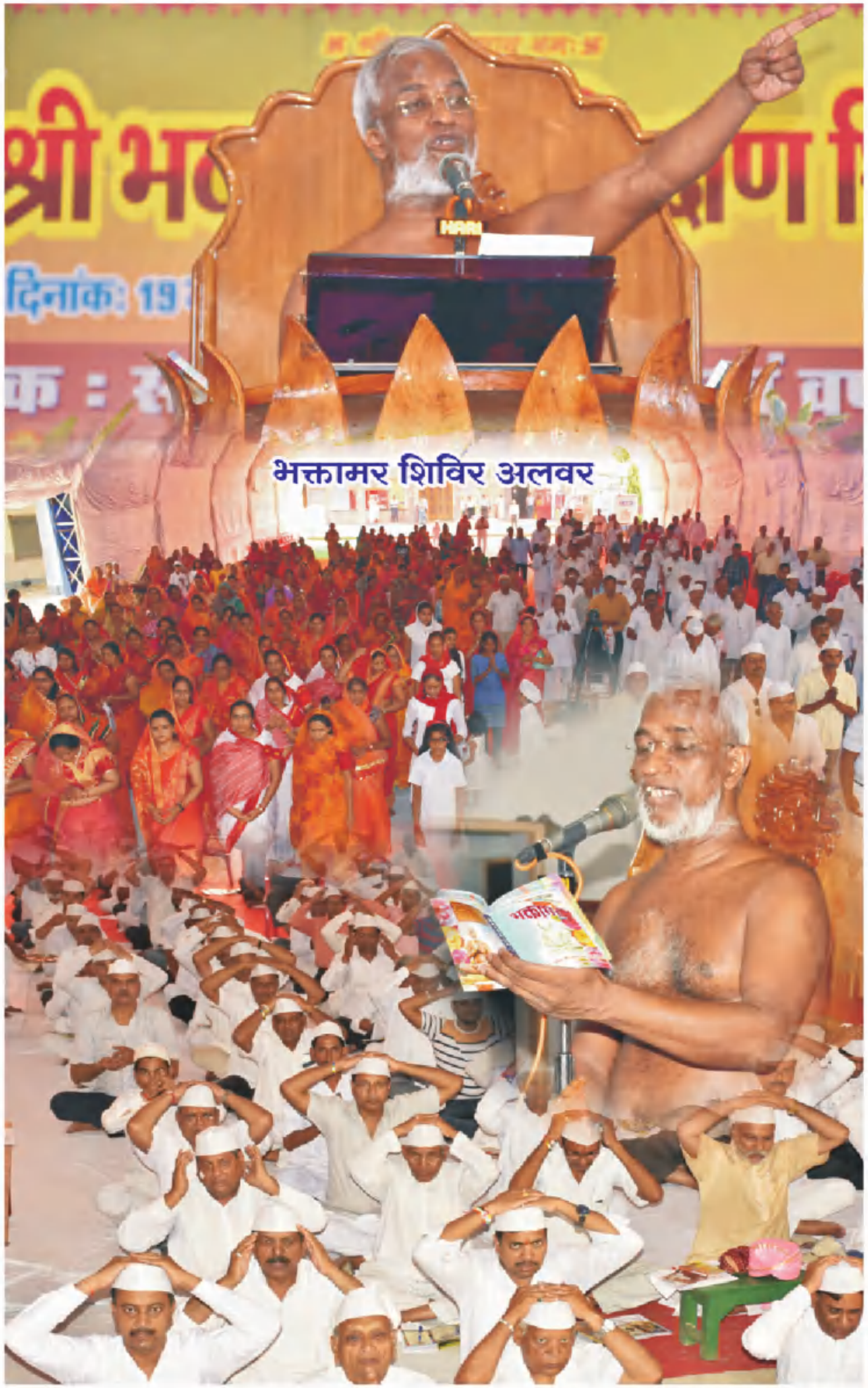
भक्तामर शिविर अलवर

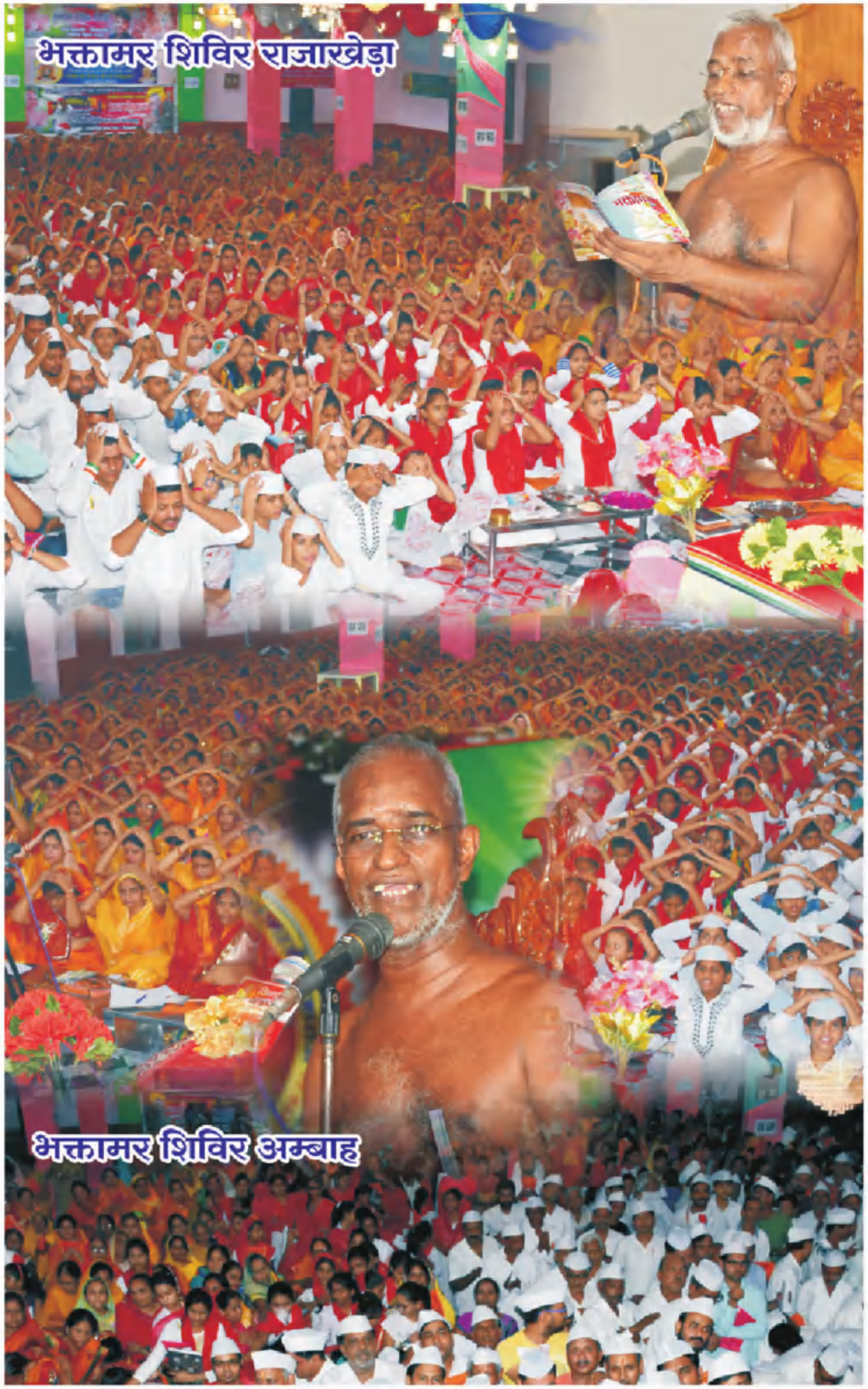
भक्तामर शिविर राजाखेड़ा
भक्तामर शिविर अम्बाह

“आज मानव की मूर्खता मनुष्य के शरीर का अनुसंधान–

चीनी–100 दूध के कप मीठे हो जायें।

लोहा–एक कील बनायी जा सके।

पोटेशियम–एक खिलौना तोप से विस्फोट किया जा सके।

गन्धक–एक कुत्ते के पिस्सु रोगाणुओं से निजात पायी जा सके।

फास्फोरस–माचिस के 20 बॉक्स बनाये जा सकें।

चर्बी–साबुन के एक दर्जन पीस बन सकें।

ताँबा–एक पैसा बनाया जा सके।

पानी–एक छोटा बच्चा स्नान कर सकें।

हे भव्यात्माओ! इस 100 रू. के शरीर पर लाखों खर्च करना इससे बड़ी मूर्खता आखिर क्या होगी।?”

“Research on the body of the stupidity of today's human being-

Sugar- 100 cups of milk become sweet,

Iron- a nail can be made,

Potassium- can be blasted from a toy cannon,

Sulphur- can get rid of a dog's flea germs,

Phosphorus- 20 boxes of matches can be made,

Fat- A dozen of cakes of soap can be made,

Copper- a penny can be made,

Water- a small child can have a bath.

O soul! What a great foolishness to spend lakhs of rupees on the body of 100 rupees!”

"हे भव्यात्माओं! लोभ से कभी लाभ नहीं हो सकता यह लोभ संसार का मार्ग है, दु:खों की खान है व्यसनों का मंदिर है। कदाचित् सूर्य ठण्डा हो सकता है, चन्द्रमा प्रतापी हो सकता है, वायु स्थिर हो सकती है, अग्नि दाह रहित हो सकती है, परन्तु लोभ रूपी अग्नि दाह से रहित नहीं हो सकती है। अत: लोभ से लाभ नहीं हो सकता और न हि इससे जीवन का भला हो सकता है।"

"Greed can never benefit. Greed leads one to the worldly ways. Greed is the temple (source) of sorrows and addictions. Perhaps the Sun may be cool; the Moon may be majestic, the wind may be stable; the fire may be free of burning; however, the fire of greed cannot be free from burning. Therefore, there is no profit from the greed it can do good for the life."

"लोभ मोक्ष रूपी मार्ग को भस्म करने के लिए–अग्नि है।
पुण्य रुपी समुद्र पीने को – अगस्त्य ऋषि है।
क्रोधाग्नि उत्पन्न करने को – लकड़ी/ईंधन है।
प्रतापरूपी सूर्य ढकने को – मेघ है।
विवेक रूपी चन्द्रमा ग्रसने को – केतु है।
कीर्तिरूपी लताओं के नष्ट को – हाथी के सदृश है।

अंग्रेजी में कुत्ते को Dog कहते हैं, इसका उल्टा God होता है। अत: लोभ लालसा ने मनुष्य को कुत्ता बना रखा है यह छूट जाए तो वह भगवान बन जाए।"

"Greed is the cause to burn the path to salvation - is fire,

To drink the sea of virtues - is the sage August,

To ignite the anger - wood/fuel,

To cover the majesty of the Sun - is rain (clouds),

To eclipse the discretion of the Moon- is Ketu,

To destroy the creepers of fame- is equivalent to an elephant,

In English 'kutta' is called a dog and its opposite is God, so the greed and lust have made a human being a dog; if these are given up, he becomes God."

"समस्त पापों का कारण एकमात्र क्रोध है, यह क्रोध सर्व प्रकार से अनिष्टकर कहा गया है। वहीं दूसरी ओर क्षमा पुण्य प्रसवनी है। क्रोध करना बहुत सरल है, कठिन तो क्षमा करना है, ठीक उसी प्रकार श्रद्धा का टूटना तो बहुत सरल है लेकिन होना मुश्किल है। अतः श्रद्धा को मजबूत बनाये रखिए क्योंकि तलवार टूट जाती है लेकिन उसकी धार प्रत्येक टुकड़े में बराबर बनी रहती है ठीक वैसे ही मनुष्य मर जाता है, पर्याय बदल जाती है परन्तु यदि सम्यक् श्रद्धान है तो वह कभी नहीं मरता।"

"Only reason for all sins is anger. This anger has been said to be harmful in every way, while, on the other hand forgiveness is a boon. It is very easy to get angry, but it is equally difficult to forgive. In the same way, it is very easy to break faith, but it is difficult to have it. Therefore, keep your faith strong because a sword breaks, but edges remain the same in every piece of it. Likewise, a man dies, its body form changes, but, if the faith is true, it never dies."

"ध्यान रखिये! जब में दिल में श्रद्धा व समर्पण होगा, तब पत्थर में भी परमात्मा दिखायी देंगे लेकिन जब श्रद्धा का अभाव होगा तब भगवान में भी पत्थर ही नजर आयेंगे। ध्यान रखिए! जिसे पढ़ने में सैकेण्ड, सोचने में मिनिट, समझने में दिन व साबित करने में सारा जीवन निकल जाता है वह है श्रद्धा, विश्वास और यह सम्यक् श्रद्धा ही है जो जीव को रास्ते की धूल से उठाकर आसमान का फूल बना देती है। "फर्श से अर्श" तक की यात्रा कराता है।"

"Keep in mind! When there is faith and dedication in the mind, then God will be visible in a piece of stone. But, if there is lack of faith, then only stone is seen in God. Be careful! That which takes seconds to read; minutes to think; days to understand and the whole of the life to prove, it is faith. It is belief and true faith which lifts a living being from the dust of the earth to the flower of the sky thus makes its journey from the floor to the height of the sky."

"प्रत्येक व्यक्ति को भाग्य प्रधान नहीं पुरुषार्थ प्रधान बनना चाहिए क्योंकि जब हम खुदा के भरोसे चलते हैं तब किस्मत का लिखा हुआ ही मिलता है लेकिन जब हम खुदा के भरोसे चलते हैं तब खुदा स्वयं हमारा भाग्य लिखता है।"

"Every person should become effort-oriented and not luck-oriented. Because, when we rely on God, we get only what is written in our luck; but when we rely on ourselves, then the God himself writes our destiny."

"ईश्वर और संतों का धरती पर कोई पता हो या न हो पर ये बात सदैव पते की ही कहते हैं और संतों का पता नहीं रहता परन्तु इनके पास रहने से अपने निज घर का पता अवश्य मिल जाता है। संत पते की बात करकर पते पर पहुँचा देते हैं।"

"God and saints may have or not have any address on the earth, but they always talk about the right business. Though the saints have no address of their own, but in their company one gets the address of one's own destination. Saints talking about the right business, lead one to the right destination."

“दुनियाँ की कोई भी वस्तु चाहे सोना हो, हीरा हो, खजाना हो, जमीन हो, जायदाद हो, कुछ हो हम मनुष्य से ज्यादा कीमती नहीं हो सकता क्योंकि इनकी कीमत ही मनुष्य ने निर्धारित की है।”

“Anything of the world, be it gold, be it diamond, be it treasure, be it land, be it property; nothing can be more valuable than human beings, because it is we human beings who have their price.”

भक्तामर शिविर भिण्ड

भक्तामर शिविर झाँसी

"सदैव श्रेष्ठ करने, बनने का प्रयास करें। श्रेष्ठ विचार ही जन्म को श्रेष्ठ बनाता है, श्रेष्ठ जन्म ही जीवन को श्रेष्ठ बनाता है और श्रेष्ठ जीवन ही श्रेष्ठतम गुणों को दिलाता है अत: श्रेय को पाना ही श्रेष्ठ है।"

"Always try to do excellent; to become the best. Only the best ideas make the birth best; the best birth makes the life the best, and the best life attains the best qualities; so it's the best to attain the best."

"प्रशस्त परिणाम भी पुण्य से होते हैं, शुभ चिंतन के लिए भी पुण्य की आवश्यकता होती है क्योंकि यदि पुण्यरूपी मिश्री का दाना आपके पास है, तो सुखरूपी चीटियाँ अपने आप आपके पास दौड़ी-दौड़ी आ जायेंगी। अत: सदैव पाप क्रियाओं से दूर रहिए व पुण्य की ओर अग्रसर होइए।"

"Auspicious are the results of the virtuous deeds, for auspicious thought process virtues are needed. If you have a grain of virtuous sugar candy, then the ants of happiness rushes towards you automatically. Therefore, always keep away from sinful activities and move towards virtues."

"हे आत्मन्! पुण्य करो क्योंकि पुण्य करने वाले मनुष्य को बहुत भारी उपद्रव भी अभिभूत नहीं करते, इसके विपरीत वह व्यक्ति विभूतियों को प्राप्त होता है अर्थात् उसके जीवन में आये उपद्रव भी सम्पत्ति प्राप्ति का कारण हो जाते हैं। जैसे–संसार को गर्मी से मुरझाने वाले सूर्य का तीक्ष्ण प्रकाश कमलों का विकास कर शोभा को प्रदान करता है।"

"Hey pious soul! Always do good, because a virtuous person cannot be overwhelmed even by heavy nuisance, on the contrary that person achieves the greatness. On in other words, the nuisance that come into his life become the source of getting wealth. For example, the same sharp light of the Sun which withers the world by its heat, helps in blooming the lotus, thus provides it beauty."

"सुख और दुःख का आधार हमारी सोच पर आधारित है, जीवन की प्रत्येक परिस्थिति में सही सोचना आ जाये तो हम दुःख से दूर रह सकते हैं। किसी को जीवन में उतना ही स्थान दें जितना कि वह आपको देता है अन्यथा या तो उसे रोना पड़ेगा या वह आपको रुलायेगा।"

"The source of happiness and sorrow is based on our thinking. If we learn to think right in every situation of life, then we can stay away from sorrows. Give someone as much space in your life as he gives to you otherwise either you will have to cry or he will make you cry."

“जीवन को सरल, सुगम बनाकर उच्चता से जीवन जीने की इस कला का प्रयोग करें। जीवन में शिकायत कम शुक्रिया अधिक करें इससे जिन्दगी खुशहाल हो जाती है। अतः आज से शुक्रिया अदा करना शुरु कर दें। फिर देखिए जीवन में चमत्कार ही चमत्कार।”

“Use the art of living by making life simple and easy and live it to its fullest. Complain less and be thankful more in life. It makes the life easier. Therefore, start expressing thankfulness from today, then see miracles after miracles in life.”

"जिन्दगी एक है, जीने के तरीके हैं बहुत, मृत्यु एक है मरने के तरीके हैं बहुत, समय एक है उपयोग के तरीके हैं बहुत, दर्द एक है सहने के तरीके हैं बहुत और बात एक है कहने के तरीके हैं बहुत। अत: ध्यान रहे बात कहने का अंदाज इतना खुबसूरत हो जितना सुन्दर आप जवाब सुनना चाहते हैं।"

"Life is one, but many are the ways to live it; the death is once but numerous are the ways to die; time is one but various are the ways to get it utilized; the pain is one but many are the ways to bear it; the fact is one but many are the ways to express it. Therefore, keep in mind that the style of saying should be as beautiful as you want to get its reply."

"विनम्रता और सौहार्दता हमारी बातों में सत्यता पैदा करती है लेकिन अहंकार और स्वार्थता हमारी बातें गलत साबित करता है अतएव अहंकार और स्वार्थ का त्याग कर अपने वचनों में विनम्रता और हार्दिकता के पुष्प खिलायें और जिससे अपनों का जीवन सत्यता की सुगंध से महक उठे।"

"Humility and warm-heartedness generate truth in our words, but the pride and selfishness prove our words wrong. Therefore, by giving up pride and selfishness, flowers of humility and warmth should be bloomed in your speech so that the life of you and your loved one's life can enjoy the fragrance of truth."

"जो व्यक्ति स्वयं अपने भीतर अवगुण नहीं देख सकता, वह कभी गुणवान नहीं बन सकता। वह कभी भी किसी का अपना भी नहीं हो सकता क्योंकि जो अपनी गलती को अपना नहीं मान सकते वो दूसरों को अपना कैसे मान सकते हैं लेकिन जिसने अपनी गलती को अपनी मान लिया वह परायों को भी अपना मान लेता है।"

"The person who cannot see the demerits within himself can never become virtuous in his life. He can never be anyone's own because those who cannot accept their mistakes as their own, how can he consider others as his own. However, those who accept their mistakes, they also consider others as their own."

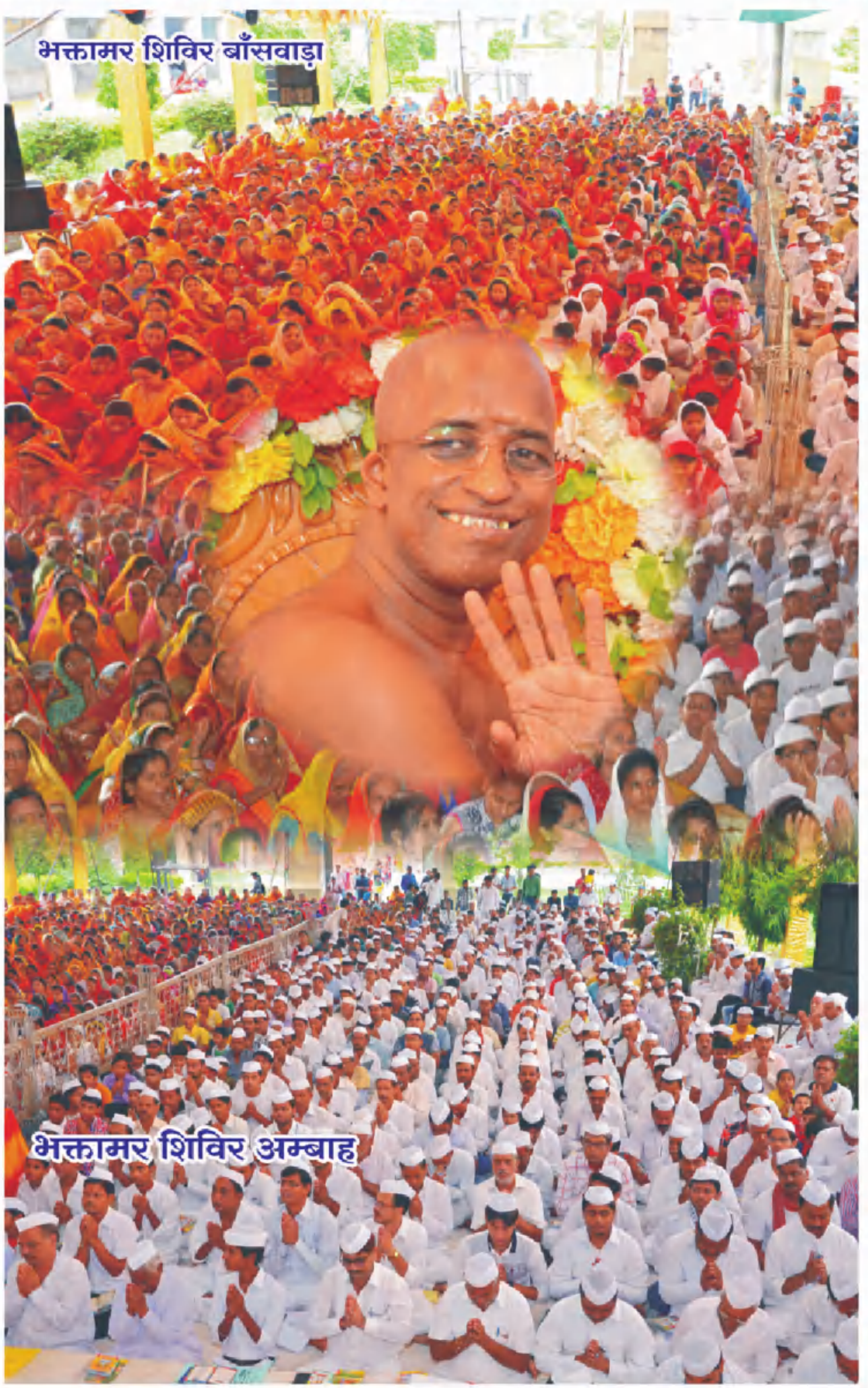
भक्तामर शिविर बाँसवाड़ा
भक्तामर शिविर अम्बाह

भक्तामर शिविर इटावा

"अवसर उन्हें ही अवसर बनते हैं जो कुछ करने के लिए तैयार हैं, उनके लिए अवसर नहीं होते जो कुछ करना नहीं चाहते। निराशावादी को अवसर कठिनाई है आशावादी को सफलता है।"

"Often opportunities are available to those who are ready to do something. Opportunities are not for those who are not ready to do anything. Often, a pessimist faces difficulties while an optimist always gets success."

"त्याग व दान में इतना ही अंतर है कि त्याग में अहंकार सिर से उतरता है और दान में तो कई बार अहंकार सिर पर और ज्यादा चढ़ जाता है। त्याग से पाप का मूलधन चुकता है और दान के द्वारा पाप का ब्याज चुकता है। पर ध्यान रहे सच्चा दान वही है जिसका प्रचार नहीं प्रसार किया जाए।"

"The only difference between renunciation and charity is that in renunciation ego descends down the head and many a times in charity the ego ascends more up the head. The renunciation pays the principal amount off and by charity the interest of the sins is paid off. But always keep in mind that the true charity is that which is not publicized rather it is spread."

"हमें सत्य के लिए सब कुछ त्याग कर देना चाहिए लेकिन किसी के लिए सत्य का त्याग नहीं करना चाहिए। क्योंकि सच कड़वा होता नहीं है लगता है वो भी उन्हीं को जो मुँह में नमक (अज्ञान) की भेली दबाकर शक्कर का स्वाद लेना चाहते हैं। ध्यान रखिए– सत्य वह गुलजार बाग है, जिसमें काँटे नहीं होते। हे भव्य! तू सच्चाई को स्वीकार कर ले तो दौलत तेरी दोस्त और भाग्य तेरा मददगार हो जाएगा।"

"We should sacrifice everything for the sake of truth but should never be sacrificed for anyone, because truth is not bitter but it seems to be bitter only to those who want to taste sugar by pressing salt in their mouth. Always remember, truth is that blooming garden which does not have thorns. O Grand soul! If you accept the truth, then the wealth becomes your friend and the fortune will be your helper."

"जिन्दगी में अच्छे लोगों की तलाश मत करिये, स्वयं अच्छे बनिये क्या पता आपसे मिलकर किसी और की तलाश पूरी हो जाये। सदैव परोपकार के कार्यों के लिए अग्रसर रहिये क्योंकि दरिया बनकर किसी को डुबाना तो बहुत आसान है परन्तु जरिया बनकर किसी को बचाना ही वास्तविकता में इंसानियत है।"

"Don't look for the good people in life, be good yourself, who knows someone else's search may be fulfilled by meeting you. Always be on the lookout for charitable deeds because it is easy to drown any person becoming a pond, but it is equally difficult to save someone by being through. It is humanity in the real sense."

"आइये जानतें अपनेपन का अनूठा गणित–

अपनेपन में मित्रता को जोड़े, उसमें से शत्रुता को घटाएँ, सद्भावनाओं का गुणा करें और बुरे विचारों का भाग दें इतना करने पर, जो उत्तर संख्या प्राप्त होगी उससे जीवन में वह मधुर संगीत गूँजेगा जो आत्मानंद को प्रदान कराकर आपका समग्र जीवन संगीतमय कर देगा।"

"Let us know the unique mathematics of affinity-

Add friendship to affinity, subtract enmity from it, multiply it with goodwill, and divide it by the ill-thoughts, by doing much that, whatever result is got will be answer and that melodious music will reverberate in life, which will make your whole life musical by attaining rejoicing of the soul."

"अपने आप पर विश्वास रखिये और अपनी शक्तियों पर भरोसा। याद रखें तुम्हारे भीतर वह शक्ति है जो एक बार जागने पर मनुष्य को न केवल ईमानदार, मेहनती, सफल और सुसंस्कृत बना देती है बल्कि आत्मा की उन अनंत शक्तियों के द्वार खोल देती है, जो हमें उच्च से उच्च स्वर्ग और मोक्ष की ओर ले जाती है।"

"Have faith in yourself and have faith in your powers. Keep remember that within you such is power that once awakened makes a human being not only honest, industrious, successful and cultured, but also opens the door to the infinite possibilities of the soul which lead us to the highest heaven and salvation."

“संत समाज के ड्राइवर हैं एक बस में मुसाफिर सो सकता है लेकिन ड्राइवर का जागना आवश्यक है। जिस प्रकार गाड़ी को समय–समय पर सर्विस की आवश्यकता होती है उसी तरह दिल दिमाग की सफाई के लिए सत्संग की आवश्यता होती है।”

“Saints are like the drivers of the society. Passengers can sleep in a bus, but the driver must be awake' Just as a vehicle needs timely service, in the same way good accompaniment is needed for the cleanliness of the heart and mind.”

बहुचर्चित कृतियाँ

1. सचित्र भक्तामर स्तोत्र
2. सचित्र कल्याण मंदिर स्तोत्र
3. श्रुत मंथन महाकाव्य (जीवन है पानी की बूँद पर आधारित)
4. भक्ति प्रबोधिनी टीका (संस्कृत)
5. कल्याण प्रबोधिनी टीका (संस्कृत)
6. सर्वोदयी टीका (अंग्रेजी) भाग-1-2
7. सिद्धान्त प्रबोधिनी टीका (प्राकृत)
8. भक्तामर महामंडल विधान (वृहद्)
9. कल्याण मंदिर महामण्डल विधान (वृहद्)
10. श्री जिन सहस्रनाम महामण्डल विधान (वृहद्)
11. सिद्धान्त दिग्दर्शिका
12. उच्चारणाचार्य चरित्र
13. होनी अनहोनी
14. जीवन है पानी की बूँद
15. बूँद-बूँद में सागर
16. अंतस् का पराग
17. समंदर की लहरें
18. भक्ति की छलक
19. आस्था के स्वर
20. भक्तामर स्तोत्र
21. तन्मयता की बेला
22. श्रावक ज्ञान मंजरी
23. कल्याण मंदिर स्तोत्र
24. सामायिक पाठ
25. विराग सुमन
26. विराग वंदना (विराग शतक)
27. रत्नत्रय विधान
28. शांतिनाथ विधान
29. भक्तामर विधान
30. खजाने के मोती
31. तासीर के मंजर
32. गा लो गुरु गुणगान
33. गुनगुनाता संदेश
34. अनुभूतियों के भँवर
35. गजब की लाइनें
36. असरदार लाइनें
37. जिनसहस्रनाम स्तोत्र
38. Philosophy of Karma
39. Moral Science for Children-I
40. Moral Science for Children-II
41. Moral Science for Children-III
42. English Quotation
43. What is Truth
44. Know your future
45. What is Life
46. Moral Science (The Complete Book of Jainism for children)
47. ऐसा क्यों? भाग-1
48. जिन्दगी क्या है?
49. सच क्या है?
50. स्वर्ग यहाँ नरक यहाँ
51. जब मिल जायें रे
52. हकीकत का पैगाम
53. जमाने का सच
54. अपना भविष्य जानो
55. जानिए सम्यक् दीपावली
56. दैनिक कर्त्तव्य
57. बोलती कविताएँ
58. सच्ची बात-1
59. सच्ची बात-2
60. सच्ची बात-3
61. मेरी पहेली का जवाब दो-1
62. मेरी पहेली का जवाब दो-2
63. तत्त्वार्थ सूत्र (प्राकृत,संस्कृत,अंग्रेजी,हिन्दी भाषा में अर्थ सहित)
64. गुरु महिमा (गुरु पूजन)
65. सम्मेद शिखर वंदना
66. छहढाला प्रश्नोत्तरी
67. प्रतिक्रमण हिंदी (श्रमण व श्रावक)
68. भक्तामर अखण्ड पाठ
69. ऐसा क्यों?-2
70. ऐसा ही है
71. चंबल के चंदन (काव्यमय जीवनगाथा)
72. आचार्य परमेष्ठी विधान (हिंदी, बुंदेली)
73. Philosophy of Soul जीव विज्ञान
74. सर्वोदया टीका (English)
75. श्रुत मंथन महाकाव्य

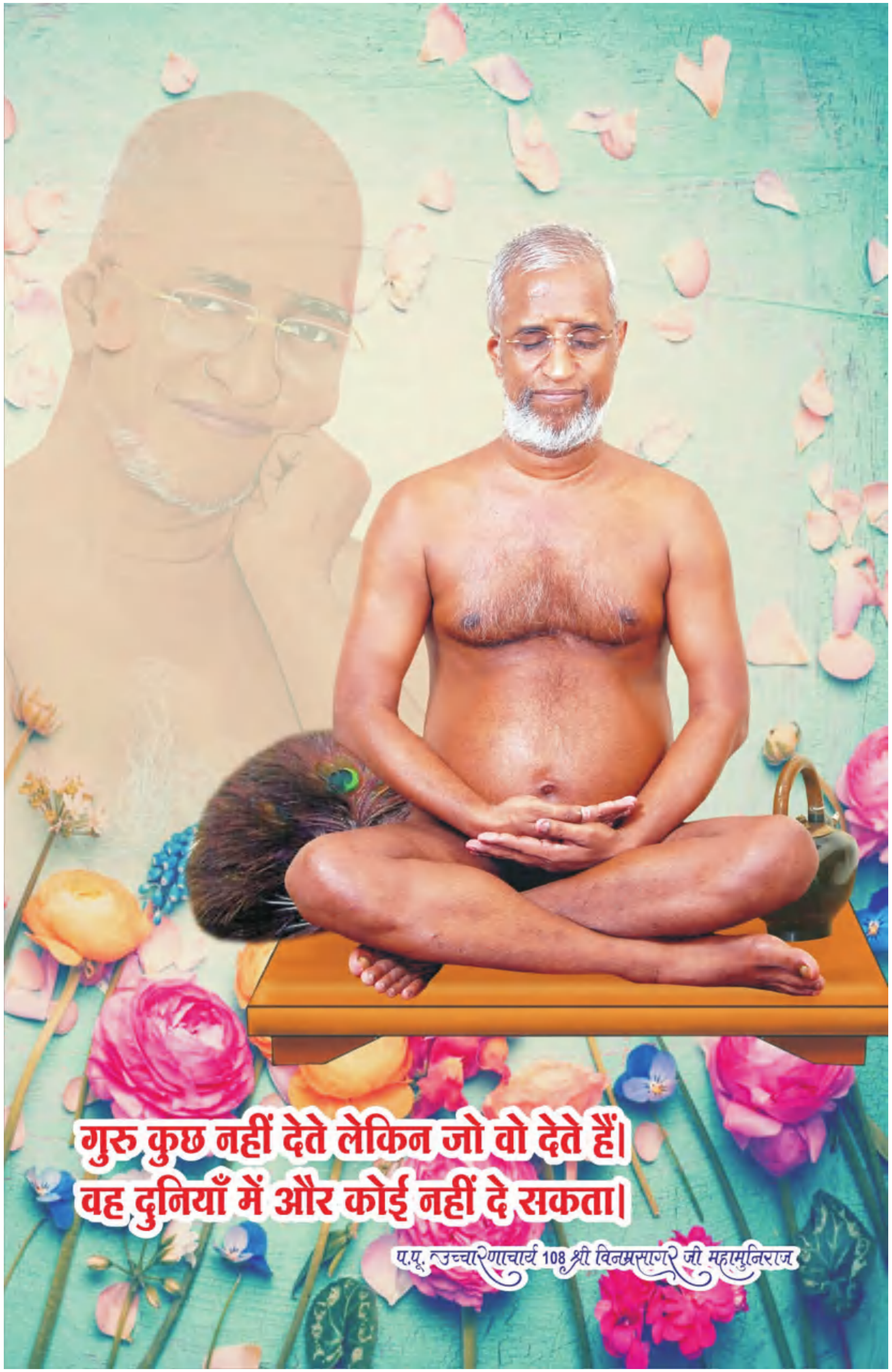
गुरु कुछ नहीं देते लेकिन जो वो देते हैं।
वह दुनियाँ में और कोई नहीं दे सकता।
प.पू. उच्चारणाचार्य 108 श्री विनम्रसागर जी महामुनिराज